अध्याय 02

# वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

**इस अध्याय में...**

- अंतर्देशीय उत्पादन
- देशों के उत्पादन को एक–दूसरे से जोड़ना
- विदेशी व्यापार और बाजारों का एकीकरण
- वैश्वीकरण
- विश्व व्यापार संगठन
- भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव
- न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष

**वैश्वीकरण**[1] (Globalisation) **विदेशी व्यापार**[2] (Foreign Trade) और बहुराष्ट्रीय कंपनियों (Multinational Companies, MNCs) के विदेशी निवेश (Foreign Investment) के माध्यम से देशों के मध्य एकीकरण है। हाल के वर्षों में वैश्वीकरण के कारण भारतीय बाजार पूर्णत: परिवर्तित हो गए हैं।

## अंतर्देशीय उत्पादन

वैश्वीकरण के आरंभिक दौर (Early Phase) में भारत जैसे औपनिवेशिक देशों (Colonial Countries) से कच्चे माल का निर्यात (Export) और औद्योगिक रूप से विकसित यूरोपीय देशों एवं संयुक्त राज्य अमेरिका से तैयार उत्पादों का आयात (Import) सम्मिलित था, लेकिन 20वीं सदी के मध्य से वस्तुओं का बदलना प्रारंभ हुआ। कुछ कंपनियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बन गईं, क्योंकि उन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अपनी आर्थिक गतिविधियों का विस्तार किया था।

### बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ

बहुराष्ट्रीय कंपनी (Multi National Company) एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती है। यह उन प्रदेशों में कार्यालय एवं उत्पादन के लिए कारखाने स्थापित करती है, जहाँ उसे सस्ते श्रमिक (Cheap Labour) एवं अन्य संसाधन प्राप्त होते हैं। वे अपने अंतिम उत्पादों (Finished Products) को विश्व स्तर पर बेचती हैं और वैश्विक रूप से ही माल एवं सेवाओं का उत्पादन भी करती हैं। उत्पादन की प्रक्रिया छोटे भागों में बाँटी जाती है तथा विश्वभर में फैला दी जाती है।

### बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विस्तार से लाभ

विभिन्न देशों में उत्पादन का विस्तार होने से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सस्ती कीमतों पर सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे उनका लाभ अत्यधिक बढ़ जाता है। उत्पादन के विस्तार से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ **अविकसित देशों** (Underdeveloped Countries) में रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं।

## देशों के उत्पादन को एक-दूसरे से जोड़ना

देशों को उत्पादन द्वारा जोड़ने के कुछ महत्त्वपूर्ण माध्यम नीचे दिए गए हैं

- **विदेशी निवेश** (Foreign Investment) इसका अर्थ है कि एक देश में आधारित कंपनी (सामान्यत: एक बहुराष्ट्रीय कंपनी) किसी

1 **वैश्वीकरण** (Globalisation) विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाती है।

2 **विदेशी व्यापार** (Foreign Trade) विदेशी व्यापार एक माध्यम है, जो अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए उत्पादकों को एक अवसर प्रदान करता है।

दूसरे देश में स्थित कंपनी में निवेश करती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विदेशी इकाइयों में कारखानों या कार्यालयों की स्थापना करके उत्पादन इकाइयाँ स्थापित की हैं।

- **साझेदारी/संयुक्त उद्यम** (Partnership/Joint Venture) कभी-कभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों के साथ मिल जाती हैं और संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। इस तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान करती हैं, जैसे कि तीव्र उत्पादन के लिए नई मशीनें खरीदना और उत्पादन के लिए नवीनतम तकनीक लाना।
- **स्थानीय कंपनियाँ** (Local Companies) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय उत्पादन इकाइयाँ क्रय करती हैं या स्थानीय कंपनियों के साथ मिलकर उत्पादन बढ़ाती हैं।
- **स्थानीय कंपनियों के अनुबंध** (Contract to Local Companies) विकसित देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर देती हैं, क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने ब्रांड नाम के अंतर्गत इनके उत्पादों को बेचती हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन दूर के उत्पादकों के लिए मूल्य, गुणवत्ता, वितरण और श्रम की स्थिति निर्धारित करती हैं।

# विदेशी व्यापार और बाजारों का एकीकरण

विदेशी व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य एक व्यापार है। इसे **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार** (International Trade), **बाह्य व्यापार** (External Trade) या **अंतर्क्षेत्रीय व्यापार**[3] (Inter-regional Trade) भी कहा जाता है। इसमें आयात और निर्यात होता है। विदेशी व्यापार बाजारों के एकीकरण में निम्न प्रकार से मदद करता है

- देशों के मध्य माल और सेवाओं के आवागमन की सुविधा।
- घरेलू बाजारों अर्थात् अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए उत्पादकों को एक अवसर प्रदान करना।
- बाजार में ग्राहकों के लिए वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं।
- बाजार में नई प्रौद्योगिकी और विचारों को बढ़ावा मिलता है।
- उत्पादकों में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा से ग्राहकों को वस्तुओं और सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होती है।

# वैश्वीकरण

- वैश्वीकरण (Globalisation) विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश के द्वारा विभिन्न देशों के मध्य परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया है। इसी कारण से बाजार और उत्पादन केंद्रों का एकीकरण हुआ है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। विभिन्न देशों के बीच अधिक-से-अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं, निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान हो रहा है।
- वस्तुओं, सेवाओं, निवेशों और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने का एक माध्यम **प्रवास/आवागमन** (Migration) भी है। लोग प्राय: बेहतर आय (Income), बेहतर रोजगार एवं शिक्षा की तलाश में एक देश से दूसरे देश में आवागमन करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में अनेक प्रतिबंधों के कारण विभिन्न देशों के बीच लोगों के आवागमन में अधिक वृद्धि नहीं हुई है।

### वैश्वीकरण में आई टी की भूमिका

- विगत 50 वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में अत्यधिक उन्नति हुई है। इसने लंबी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्र आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया है।
- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology, ICT or IT) ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है।
- दूरसंचार सुविधा (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स) और उपग्रह संचार का उपयोग विश्व में एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में किया जाता है।

## विदेशी निवेश नीति

सरकार द्वारा अपनाई गई विदेश व्यापार नीति ने वैश्वीकरण को काफी प्रभावित किया। **व्यापार अवरोधक**[4] (Trade Barrier) भी सरकार द्वारा अपनाई गई विदेश नीतियों में से एक है।

### व्यापार अवरोधक

- सरकार द्वारा माल या सेवाओं (Goods and Services) के अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान पर प्रतिबंध लगाना व्यापार अवरोधक कहलाता है। आयात पर कर (आयात शुल्क) व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है। इसे अवरोधक इसलिए कहा गया है, क्योंकि यह कुछ प्रतिबंध लगाता है।
- सरकार व्यापार अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार में वृद्धि या कटौती (नियमित करने) करने और देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में आयातित होनी चाहिए, यह निर्णय करने के लिए कर सकती है।
- इसी तरह **कोटा** (Quotas) आयात या निर्यात करने के लिए माल की मात्रा पर प्रतिबंध का एक तरीका है।

### विदेश व्यापार पर प्रतिबंध

- स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने विदेश व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा रखा था। **देश के उत्पादकों** (Domestic Producers) को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षण प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य माना गया।
- 1950 और 1960 के दशकों में उद्योगों का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्द्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती, इसलिए भारत ने केवल अनिवार्य वस्तुओं; जैसे—मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी।

---

3 **अंतर्क्षेत्रीय व्यापार** (Inter-regional Trade) उत्पादन मुख्यतः देश की सीमाओं के अंदर सीमित होता है तथा इस पर स्वामित्व और नियंत्रण सरकार का होता है।

4 **व्यापार अवरोधक** (Trade Barrier) व्यापार अवरोधक से तात्पर्य विदेश व्यापार में आयातित वस्तुओं पर लगने वाले 'कर' से है। सरकार व्यापार अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार में नियमन हेतु करती है।

### नई आर्थिक नीति, 1991

- वर्ष 1991 के आस-पास यह अनुभव किया गया था कि भारतीय उत्पादकों को विश्व के निर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्द्धा करनी चाहिए, जिससे वे अपने प्रदर्शन और वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकें।
- यही कारण है कि वर्ष 1991 में भारत सरकार ने अपनी विदेशी व्यापार नीति में कुछ बड़े बदलाव किए थे। एक ऐसा बदलाव उदारीकरण (Liberalisation) था। यह निर्णय **विश्व व्यापार संगठन**[5] (World Trade Organisation, WTO) जैसे शक्तिशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्थित था।

### उदारीकरण

सरकार द्वारा अवरोधकों अथवा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण (Liberalisation) के नाम से जानी जाती है। भारत में यह वर्ष 1991 में भारत सरकार द्वारा आयात पर प्रतिबंध को कम करने के निर्णय को संदर्भित करता है।

व्यापार के उदारीकरण से व्यवसायियों को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की अनुमति मिली है कि वे क्या आयात या निर्यात करना चाहते हैं। वर्तमान में सरकार पहले की तुलना में कम प्रतिबंध लगाती है, इसलिए इसे और अधिक उदार माना जाता है।

## विश्व व्यापार संगठन

- विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organisation, WTO) एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो देशों के बीच व्यापार के वैश्विक नियमों का पालन करता है। इसका मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार आसानी से, अनुमानित रूप से और जितना संभव हो उतना स्वतंत्र रूप से हो। इसने भारत के विदेशी व्यापार और निवेश के उदारीकरण का समर्थन किया है।
- विकसित देशों की पहल पर विश्व व्यापार संगठन ने अपना कार्य आरंभ किया था। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण और यह सुनिश्चित करना है कि इसके सदस्य नियमों का पालन करते हैं।
- वर्तमान में विश्व व्यापार संगठन में 164 सदस्य देश हैं। दिसंबर, 2015 में केन्या में आयोजित विश्व व्यापार संगठन की 10वीं मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के दौरान दो नए सदस्यों लाइबेरिया को 163वाँ तथा अफगानिस्तान को 164वाँ सदस्य देश के रूप में जोड़ा गया।
- हालाँकि विश्व व्यापार संगठन द्वारा सभी के लिए स्वतंत्र व्यापार की अनुमति दी जाती है, लेकिन यह पाया जाता है कि विकसित देशों ने कुछ व्यापार अवरोधकों को अनुचित ढंग से बनाए हुए रखा है और विकासशील देशों को बाधाओं को दूर करने के लिए मजबूर किया है।
- इसका एक उदाहरण कृषि उत्पादों में व्यापार है। संयुक्त राज्य अमेरिका में **कृषिविदों** (Agriculturists) को उनकी सरकार द्वारा अत्यधिक सब्सिडी दी जाती है, जिससे वे विकासशील देशों के लिए कम कीमतों पर गेहूँ और कपास जैसे उत्पादों का निर्यात कर सकें।

## भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव

- वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप उत्पादकों (स्थानीय और विदेशी दोनों) के बीच अधिक प्रतिस्पर्द्धा से, उपभोक्ताओं विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में समृद्ध वर्ग को लाभ पहुँचता है। यह बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों और कम कीमतों के साथ बेहतर विकल्प देता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपने निवेश में वृद्धि की है; जैसे—सेल फोन, मोटरगाड़ियाँ, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, ठंडे पेय पदार्थ, जंक खाद्य पदार्थों एवं बैंकिंग जैसी सेवाओं में निवेश इत्यादि।
- उद्योगों और सेवाओं में नए रोजगार उत्पन्न हुए हैं, साथ ही इन उद्योगों को कच्चे माल इत्यादि की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कंपनियाँ समृद्ध हुईं।
- वैश्वीकरण नई और उन्नत तकनीक को लाता है, जिसके द्वारा स्थानीय कंपनियों को भी लाभ मिलता है।
- इंफोसिस, टाटा मोटर्स, एशियन पेंट्स, सुदरम फास्नर्स, रैनबैक्सी जैसी कुछ बड़ी भारतीय कंपनियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभरी हैं और अन्य देशों में कंपनियों की स्थापना की है।
- वैश्वीकरण ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी वाली कंपनियों के लिए नए अवसरों का सृजन किया है; जैसे—कॉल सेंटर, लेखाकरण (Accounts), प्रशासनिक कार्य (Administrative) इत्यादि।
- वैश्वीकरण ने बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों और श्रमिकों के लिए बड़ी चुनौतियाँ खड़ी की हैं।
- बैटरी, संधारित, प्लास्टिक, खिलौने, टायरों, डेयरी उत्पाद एवं खाद्य तेल के उद्योग ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ प्रतिस्पर्द्धा के कारण छोटे विनिर्माताओं को हानि उठानी पड़ी है।

### विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए सरकार के कदम

वर्तमान में भारत में केंद्रीय और राज्य सरकारें विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए विशेष कदम उठा रही हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है

- औद्योगिक क्षेत्र (Industrial Zones), जिन्हें **विशेष आर्थिक क्षेत्र** (Special Economic Zone, SEZ) कहा जाता है, की स्थापना की गई। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्वस्तरीय सुविधाएँ बिजली, पानी, परिवहन, भंडारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।
- विशेष आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने वाली कंपनियों को आरंभिक पाँच वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ता है।
- सरकार ने भी श्रम कानूनों में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए लचीलेपन की अनुमति दी है।
- संगठित क्षेत्र की कंपनियों को कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है, जो मजदूरों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। सरकार ने अनेक नियमों से कंपनियों को छूट देने की अनुमति दी है।
- श्रमिकों को नियमित आधार पर भर्ती करने के बजाय, कंपनियाँ जब काम का अत्यधिक दबाव होता है, तब लोचदार तरीके से कम समय के लिए श्रमिकों को भर्ती करती हैं। यह कंपनी के लिए श्रम की लागत को कम करने के लिए किया जाता है।

---

5 **विश्व व्यापार संगठन** (World Trade Organisation) विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाने हेतु विकसित देशों की पहल पर शुरू किया गया एक संगठन है।

### बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा और अनिश्चित रोजगार

वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्द्धा के दबाव ने श्रमिकों के जीवन के स्वरूप को बदल दिया है। बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के कारण अधिकांश नियोक्ता इन दिनों श्रमिकों को रोजगार देने में **लचीलापन** (Flexibility) पसंद करते हैं। इसका अर्थ यह है कि श्रमिकों का रोजगार अब सुरक्षित नहीं है। इसका विशिष्ट उदाहरण वस्त्र निर्यात उद्योग है।

भारतीय वस्त्र निर्यातकों ने श्रम लागतों को कम करके अपनी लागत में कटौती करने की कोशिश की, क्योंकि कच्चे माल की लागत कम नहीं की जा सकती, इसलिए वे केवल अस्थायी आधार पर श्रमिकों को नियोजित करते हैं, श्रमिकों को बहुत कम मजदूरी मिलती है और उन्हें अपने खर्चों का प्रबंधन करने के लिए ओवरटाइम करना पड़ता है। यहाँ तक कि संगठित क्षेत्र में श्रमिकों को अब सुरक्षा और लाभ नहीं मिलेगा, जो उन्हें पहले मिलता था।

## न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष

- वैश्वीकरण से मिले नए अवसरों का शिक्षित कौशल और धनी लोगों ने सर्वोत्तम उपयोग किया है। इसे अधिक 'न्यायसंगत' बनाने के लिए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वैश्वीकरण के लाभ बेहतर साझा किए गए हैं और सरकारी नीतियों को देश के सभी लोगों के हितों की रक्षा करनी चाहिए।
- यह छोटे उत्पादकों को उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायता कर सकता है, जब तक वे प्रतिस्पर्द्धा के लिए सक्षम न हो जाएँ। यदि आवश्यक हो तो सरकार व्यापार और निवेश अवरोधों का उपयोग कर सकती है।
- सरकार विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organisation, WTO) के साथ 'न्यायपूर्ण नियम' के लिए बातचीत कर सकती है। यह अन्य विकासशील देशों के साथ संरेखित भी हो सकता है, जो विश्व व्यापार संगठन में विकसित देशों के अधिकार के खिलाफ लड़ने के लिए समान हितों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

# चैप्टर प्रैक्टिस

## भाग 1

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

### बहुविकल्पीय प्रश्न

**1.** एक से अधिक देशों में उत्पादन करने वाले कंपनियों को क्या कहा जाता है?

(a) अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ (b) विदेशी कंपनियाँ
(c) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (d) व्यापारिक कंपनियाँ

**उत्तर** (c) एक से अधिक देशों में उत्पादन करने वाले कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कहा जाता है। ये कंपनियाँ अपने कार्यालय की स्थापना वहीं करती हैं, जहाँ उन्हें श्रमिक एवं अन्य संसाधन प्राप्त होते हैं।

**2.** उत्पादन के विस्तार से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस देश में रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं?

(a) विकसित देश (b) अविकसित देश
(c) अल्पविकसित देश (d) समृद्ध देश

**उत्तर** (b) उत्पादन के विस्तार से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अविकसित देश में रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं, जिससे उनके लाभ में वृद्धि होती है।

**3.** किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा विभिन्न देशों में किया गया निवेश कहलाता है

(a) विदेशी निवेश (b) वितरण
(c) उत्पादन (d) व्यय

**उत्तर** (a) किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा विभिन्न देशों में किया गया निवेश विदेशी निवेश कहलाता है। इस निवेश से उत्पादन में वृद्धि तथा रोजगार की स्थिति में सुधार होता है।

**4.** दिए गए कथनों से संबंधित विकल्प का चयन करें

- इन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर प्राप्त होता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने ब्रांड, नाम के अंतर्गत इनके उत्पादों को बेचती हैं।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा इनके लिए मूल्य गुणवत्ता तथा श्रम का निर्धारण किया जाता है।

(a) संयुक्त कंपनियाँ
(b) स्थानीय कंपनियाँ
(c) सार्वजनिक कंपनियाँ
(d) ये सभी

**उत्तर** (b) स्थानीय कंपनियाँ

**5.** विदेशी व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य एक व्यापार है, जिसे कहा जाता है

(a) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(b) बाह्य व्यापार
(c) अंतर्क्षेत्रीय व्यापार
(d) ये सभी

**उत्तर** (d) विदेशी व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य एक व्यापार है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, बाह्य व्यापार तथा अंतर्क्षेत्रीय व्यापार कहा जाता है। यह देशों के मध्य माल और सेवाओं के आवागमन की सुविधा प्रदान करता है।

**6.** निम्नलिखित में से कौन वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारण से सम्मिलित नहीं है?

(a) परिवहन (b) मुद्रा
(c) प्रौद्योगिकी (d) सूचना एवं संचार

**उत्तर** (b) मुद्रा वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारण में सम्मिलित नहीं है, जबकि परिवहन, प्रौद्योगिकी तथा सूचना एवं संचार वैश्वीकरण के लिए आवश्यक हैं।

**7.** सरकार द्वारा आयात या निर्यात होने वाली वस्तुओं की संख्या सीमित करना ………… कहलाता है।

(a) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (b) प्रतिबंध
(c) कोटा (d) नियमन

**उत्तर** (c) सरकार द्वारा आयात या निर्यात होने वाली वस्तुओं की संख्या सीमित करना कोटा कहलाता है। इसके द्वारा सरकार अपने स्थानीय उद्योगों को संरक्षण प्रदान करती है।

**8.** भारत में विदेशी व्यापार को स्वतंत्रता पश्चात् क्यों नियोजित किया गया?

(a) प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा देने के लिए
(b) देशी उत्पादकता का संरक्षण करने के लिए
(c) गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए
(d) व्यापार में बढ़ोतरी करने के लिए

**उत्तर** (b) भारत में विदेशी व्यापार को स्वतंत्रता पश्चात् देशी उत्पादकता के संरक्षण के लिए नियोजित किया गया था। इसके अंतर्गत भारत ने सर्वप्रथम अपने उत्पादकों को प्रतिस्पर्द्धा लायक बनाया था।

**9.** दिए गए कथनों से संबंधित विकल्प का चयन करें

- इसके अंतर्गत भारत द्वारा व्यापार से अवरोधों तथा प्रतिबंधों को हटाया गया।
- भारत में इस प्रक्रिया की शुरुआत वर्ष 1991 में की गई।
- इस प्रकार का निर्णय विश्व व्यापार द्वारा समर्थित था।

(a) उदारीकरण (b) वैश्वीकरण
(c) निजीकरण (d) नियोजीकरण

**उत्तर** (a) उदारीकरण

**10.** विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसमें सदस्यों देशों की संख्या ……… है।

(a) 162 (b) 164
(c) 166 (d) 168

**उत्तर** (b) विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसमें सदस्यों देशों की संख्या 164 है। इसका प्रमुख कार्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार आसानी से, अनुमानित रूप से और जितना संभव हो उतना स्वतंत्र रूप से हो।

**11.** औद्योगिक क्षेत्र के विशेष आर्थिक क्षेत्र में किसका होना आवश्यक नहीं है?

(a) बिजली (b) पानी
(c) खाद्य आपूर्ति (d) परिवहन

**उत्तर** (c) औद्योगिक क्षेत्रों के विशेष आर्थिक क्षेत्र में खाद्य आपूर्ति का होना आवश्यक नहीं है। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्वस्तरीय सुविधाएँ, बिजली, पानी, परिवहन, भंडारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।

**12.** सुमेलित करें

| सूची I | सूची II |
|---|---|
| A. अंतर्क्षेत्रीय उत्पादन | 1. उत्पादन क्षेत्र सीमा के भीतर |
| B. विदेशी निवेश | 2. बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा निवेश |
| C. उदारीकरण | 3. अवरोध तथा प्रतिबंधों में छूट |
| D. न्यायसंगत वैश्वीकरण | 4. लाभ का उचित बँटवारा |

**कूट**

| | A | B | C | D | | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (a) | 2 | 1 | 4 | 3 | (b) | 1 | 2 | 3 | 4 |
| (c) | 3 | 2 | 4 | 1 | (d) | 2 | 4 | 3 | 1 |

**उत्तर** (b) 1 2 3 4

**13.** निम्नलिखित कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें

1. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है।
2. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।
3. कोटा आयात या निर्यात करने के लिए माल की मात्रा पर प्रतिबंध का एक तरीका है।

**कूट**

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

**उत्तर** (d) 1, 2 और 3

**14.** निम्नलिखित कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें

1. भारत सरकार ने नई आर्थिक नीति को घोषणा वर्ष 1991 में की थी।
2. विश्व व्यापार संगठन एक क्षेत्रीय संगठन है।
3. सेवा क्षेत्र के विस्तार से रोजगार के क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

**कूट**

(a) 1 और 2
(b) 1 और 3
(c) 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

**उत्तर** (b) भारत सरकार ने नई आर्थिक नीति की घोषणा वर्ष 1991 में की थी, जिससे भारत को व्यापारिक लाभ हुआ था। उदारीकरण के बाद ही भारत ने वैश्विक बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज की थी। सेवा क्षेत्र के विस्तार से रोजगार के क्षेत्र में वृद्धि हुई है। विश्व व्यापार संगठन एक क्षेत्रीय संगठन न होकर वैश्विक संगठन है।

## कथन-कारण प्रश्न

**निर्देश** (प्र. सं. 15-18) नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है। दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें

**कूट**

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

**15. कथन** (A) वस्तुओं, सेवाओं और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त विभिन्न देशों में वैश्वीकरण आपस में जोड़ने का एक माध्यम हो सकता है।
**कारण** (R) व्यापार के खुलने से वस्तुओं का एक बाजार से दूसरे बाजार में आवागमन होता है।

**उत्तर** (a) वस्तुओं, सेवाओं और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त विभिन्न देशों में वैश्वीकरण आपस में जोड़ने का एक माध्यम है। वैश्वीकरण द्वारा व्यापार के खुलने से वस्तुओं के साथ-साथ विचारों का भी एक बाजार से दूसरे बाजारों में आवागमन हुआ है। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

**16. कथन** (A) संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कंपनियों को दोहरा लाभ होता है।
**कारण** (R) संयुक्त उत्पादन में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अतिरिक्त निवेश के द्वारा उत्पादन में वृद्धि करती हैं।

**उत्तर** (a) संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कंपनियों को दोहरा लाभ होता है, जिसमें प्राथमिक स्तर पर धन का निवेश प्राप्त होता है, जिससे बहुराष्ट्रीय कंपनी अधिक उत्पादन करती है। संयुक्त उत्पादन के अंतर्गत बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ नई प्रौद्योगिकी को लगाती हैं, जिससे स्थानीय कंपनियों को लंबे समय तक लाभ होता है। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

**17. कथन** (A) आयात पर कर व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है।
**कारण** (R) सरकारें व्यापार अवरोधक का प्रयोग व्यापार में कटौती के लिए करती हैं।

**उत्तर** (c) आयात पर कर व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है। सरकार व्यापार अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार वृद्धि या कटौती करने और देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में आयातित होनी चाहिए, यह निर्णय करने के लिए कर सकती है। अतः A सही है, किंतु R गलत है।

**18. कथन** (A) विश्व व्यापार संगठन ने भारत के विदेशी व्यापार और निवेश के उदारीकरण का समर्थन किया है।
**कारण** (R) विश्व व्यापार संगठन का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण करना है।

**उत्तर** (a) विश्व व्यापार संगठन ने भारत के विदेशी व्यापार और निवेश के उदारीकरण का समर्थन किया है, क्योंकि विश्व व्यापार संगठन का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण करना है। विश्व व्यापार संगठन का मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार आसानी से अनुमानित रूप से और जितना संभव हो उतना ही स्वतंत्र रूप से स्थापित किया जा सके। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

## • केस स्टडी आधारित प्रश्न

**निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

सामान्यत: बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उसी स्थान पर उत्पादन इकाई स्थापित करती हैं, जो बाज़ार के नज़दीक हो, जहाँ कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम उपलब्ध हो और जहाँ उत्पादन के अन्य कारकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो। साथ ही, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सरकारी नीतियों पर भी नज़र रखती हैं, जो उनके हितों का देखभाल करती हैं। इन परिस्थितियों को सुनिश्चित करने के बाद ही बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन के लिए कार्यालयों और कारखानों की स्थापना करती हैं। परिसंपत्तियों; जैसे—भूमि, भवन, मशीन और अन्य उपकरणों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा को निवेश कहते हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किए गए निवेश को विदेशी निवेश कहते हैं। कोई भी निवेश इस आशा से किया जाता है कि ये परिसंपत्तियाँ लाभ अर्जित करेंगी। कभी-कभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन देशों की स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कंपनी को दोहरा लाभ होता है। पहला बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान कर सकती हैं, जैसे कि तीव्र उत्पादन के लिए मशीनें खरीदने के लिए। दूसरा, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन की नवीनतम प्रौद्योगिकी अपने साथ ला सकती हैं।

लेकिन, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश का सबसे आम रास्ता स्थानीय कंपनियों को खरीदना और उसके बाद उत्पादन का प्रसार करना है। अपार संपदा वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ यह आसानी से कर सकती है। उदाहरण के लिए एक बहुत बड़ी अमेरिका बहुराष्ट्रीय कंपनी कारगिल फूड्स ने परख फूड्स जैसी छोटी भारतीय कंपनियों को खरीद लिया है। परख फूड्स ने भारत के विभिन्न भागों में एक बड़ा विपणन तंत्र तैयार किया था, जहाँ उसके ब्रांड काफी प्रसिद्ध थे। परख फूड्स के चार तेल शोधक केन्द्र भी थे, जिस पर अब कारगिल का नियंत्रण हो गया है। अब कारगिल 50 लाख पैकेट प्रतिदिन निर्माण क्षमता के साथ भारत में खाद्य तेलों की सबसे बड़ी उत्पादक कंपनी है।

(i) भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन भारत सरकार की किस घोषणा की महत्त्वपूर्ण नीति थी?
(a) वर्ष 1956 में घोषित औद्योगिक नीति
(b) वर्ष 1972 में घोषित आर्थिक नीति
(c) वर्ष 1991 में घोषित नई आर्थिक नीति
(d) वर्ष 1999 में घोषित विनिवेश नीति

**उत्तर** (c) भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन भारत सरकार की वर्ष 1991 में घोषित नई आर्थिक नीति की महत्त्वपूर्ण नीति थी। इस नीति के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण को अपनाया गया था।

(ii) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सरकारी नीतियों से किस प्रकार प्रभावित होती हैं?
(a) बहुराष्ट्रीय कंपनियों को प्रत्यक्ष निवेश के लिए प्रेरित करती हैं
(b) बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अप्रत्यक्ष निवेश के लिए प्रेरित करती हैं
(c) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उत्पादन कार्य में भागीदारी निभाती हैं
(d) उपरोक्त सभी

**उत्तर** (d) उपरोक्त सभी

(iii) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश से लोगों के हितों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(a) रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं
(b) वस्तु और सेवाओं की गुणवत्ता में वृद्धि होती है
(c) नवीन तकनीक के साथ-साथ उच्च प्रौद्योगिकी का विकास होता है
(d) उपरोक्त सभी

**उत्तर** (d) उपरोक्त सभी

(iv) विकासशील देशों में ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों का निवेश सबसे अधिक क्यों होता है?

(a) विकासशील देश एक बहुत बड़ा बाज़ार होता है
(b) विकासशील देशों में कच्चे माल की उपलब्धता अधिक होती है
(c) 'a' और 'b' दोनों
(d) विकासशील देशों में स्थानीय कंपनियों का पूर्णतः अभाव रहता है

**उत्तर** (c) 'a' और 'b' दोनों

(v) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के संबंध में सही नहीं है?

(a) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अंतर्गत उत्पादन प्रक्रिया संगठित हुई है
(b) विकासशील देशों में उत्पादन से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ 50-60% तक अपने व्यय को बचाती हैं
(c) बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्पादन इकाई बड़े भागों में विभाजित है
(d) वर्तमान समय में चीन और भारत एक सस्ते विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरे हैं

**उत्तर** (c) बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्पादन इकाई बड़े भागों में विभाजित न होकर छोटे-छोटे भागों में विभाजित होती है, ताकि उत्पादकों की मात्रा नियमित बने रहे।

(vi) **कथन** (A) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश का सबसे आसान रास्ता स्थानीय कंपनियों को खरीदना या साझीदारी होता है।

**कारण** (R) बहुराष्ट्रीय कंपनी सिर्फ एक ही देश में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती है।

**कूट**

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

**उत्तर** (c) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश का सबसे आसान रास्ता स्थानीय कंपनियों को खरीदना या साझीदारी होता है। बहुराष्ट्रीय कंपनी सिर्फ एक ही नहीं, बल्कि एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती है। अतः A सही है, किंतु R गलत है।

# भाग 2

# वर्णनात्मक प्रश्न

## ● लघु उत्तरीय प्रश्न

**1. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (CBSE 2011)**

**उत्तर** बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चार विशेषताएँ निम्न हैं

(i) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती हैं।
(ii) ये उन प्रदेशों में कार्यालय एवं उत्पादन के लिए कारखाने स्थापित करती हैं, जहाँ से सस्ते श्रमिक एवं अन्य संसाधन प्राप्त होते हैं।
(iii) उत्पादन लागत में कमी करने तथा अधिक लाभ कमाने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ प्रयास करती हैं।
(iv) वे अपने अंतिम उत्पादों को वैश्विक रूप से बेचती हैं और वैश्विक रूप से ही माल और सेवाओं का उत्पादन भी करती हैं।

**2. उन कारकों को सूचीबद्ध कीजिए, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों को एक स्थान पर अपनी उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। (CBSE 2019)**

**उत्तर** बहुराष्ट्रीय कंपनियों को एक स्थान पर अपनी उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने के लिए निम्न कारण प्रोत्साहित करते हैं

- कुशल एवं अकुशल श्रम की उपलब्धता
- सस्ते मूल्य पर कच्चे माल की उपलब्धता
- सड़क एवं रेलवे जैसी बुनियादी सुविधाओं का उचित विकास
- सरकारी नीतियों का उदारीकरण
- बाजार की निकटता
- अनुकूल पर्यावरण

**3. विदेश व्यापार बाजारों के एकीकरण में मदद करता है? पुष्टि कीजिए। (CBSE 2018)**

**उत्तर** विदेश व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य संचालित व्यापार है। इसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, बाह्य व्यापार या अंतर्क्षेत्रीय व्यापार भी कहा जाता है। इसमें आयात और निर्यात होता है। विदेश व्यापार बाजारों के एकीकरण में निम्न प्रकार से मदद करता है

- देशों के मध्य माल और सेवाओं के आवागमन की सुविधा।
- घरेलू बाजारों अर्थात् अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए उत्पादकों को एक अवसर प्रदान करना।
- बाजार में ग्राहकों के लिए वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं।
- बाजार नई प्रौद्योगिकी और विचारों को बढ़ावा मिलता है।
- उत्पादकों में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा से ग्राहकों को वस्तुओं और सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होती है।

**4. वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है? वैश्वीकरण और प्रवास को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर** **वैश्वीकरण से तात्पर्य** वैश्वीकरण विभिन्न देशों के बीच विदेशी व्यापार एवं निवेश में तीव्र वृद्धि की प्रक्रिया है। इन दो कारकों के कारण ही बाजार और उत्पादन केंद्रों का एकीकरण हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। विभिन्न देशों के बीच अधिक-से-अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं, निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान हो रहा है।

**वैश्वीकरण और प्रवास** वस्तुओं, सेवाओं, निवेशों और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने का एक माध्यम प्रवास है। लोग प्रायः बेहतर आय, बेहतर रोजगार एवं शिक्षा की तलाश में एक देश से दूसरे देश में आवागमन करते हैं। विगत कुछ दशकों में अनेक प्रतिबंधों के कारण विभिन्न देशों के बीच लोगों के आवागमन में अधिक वृद्धि नहीं हुई है।

**5. वैश्वीकरण में आई टी की भूमिका के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर** वैश्वीकरण में आई टी की भूमिका निम्नलिखित है

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है।
- दूरसंचार सुविधा (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स) और उपग्रह संचार का उपयोग विश्व में एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है।
- इसका एक उदाहरण लंदन में पाठकों के लिए प्रकाशित एक समाचार-पत्र है, जिसे दिल्ली में डिजाइन और मुद्रित किया गया

है। पत्रिका का पाठ लंदन से इंटरनेट द्वारा दिल्ली के कार्यालय तक भेजा जाता है। दिल्ली कार्यालय में डिजाइनर दूरसंचार सुविधाओं का उपयोग करके लंदन कार्यालय से पत्रिका के डिजाइन के विषय में निर्देश प्राप्त करते हैं, फिर छपाई के बाद पत्रिकाओं को लंदन भेजा जाता है।

**6.** **भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाने के क्या कारण थे? इन अवरोधकों को सरकार क्यों हटाना चाहती थी?** **(NCERT)**

**उत्तर** भारत सरकार द्वारा विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर अवरोधक लगाने का मुख्य कारण देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षण प्रदान करना था। 1950 से 1960 के दशक में उद्योगों का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्द्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती।

भारत में वर्ष 1991 के प्रारंभ से ही इन अवरोधकों में परिवर्तन होने शुरू हो गए। सरकार ने यह निश्चय किया कि भारतीय उत्पादकों के लिए विश्व के उत्पादकों से प्रतिस्पर्द्धा करने का समय आ गया है। यह महसूस किया गया कि प्रतिस्पर्द्धा से देश के उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा। उन्हें अपनी गुणवत्ता में सुधार लाना होगा। इसका समर्थन अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भी किया। इन्हीं सब कारणों से सरकार अवरोधकों को हटाना चाहती थी।

**7.** **व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया में कैसे सहायता पहुँचाता है?** **(NCERT)**

**उत्तर** व्यापार और निवेश नीतियों का उदारीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया में निम्नलिखित तरीके से सहायता पहुँचाता है

(i) **व्यापार अवरोधकों को हटाकर** उदारीकरण की नीति के अंतर्गत भारत सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं के आयात और निर्यात से विभिन्न प्रतिबंधों को हटा लिया है। अब बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में वस्तुओं का आयात करने के लिए तथा भारतीय कंपनियाँ विदेशों में वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात करने के लिए स्वतंत्र हैं।

(ii) **निवेश का उदारीकरण** इस नीति के अंतर्गत बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में निवेश करने के लिए स्वतंत्र हैं। अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बैंकिंग, अधिसंरचना, ठंडे पेय पदार्थों, मोटरगाड़ियों आदि में निवेश किया है। भारत सरकार भी भारत में निवेश करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों को उत्साहित कर रही है।

(iii) **नई तकनीक** उदारीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप भारत में नई तकनीक का विकास हुआ है, जिससे वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला है।

**8.** **भारत में वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।** **(CBSE 2020)**

**उत्तर** भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव निम्नलिखित हैं

- वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप उत्पादकों (स्थानीय और विदेशी दोनों) के बीच अधिक प्रतिस्पर्द्धा से उपभोक्ताओं, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में समृद्ध वर्ग को लाभ पहुँचता है। यह बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों और कम कीमतों के साथ बेहतर विकल्प देता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपने निवेश में वृद्धि की है; जैसे–सेल फोन, मोटरगाड़ियाँ, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, ठंडे पेय पदार्थ, जंक खाद्य पदार्थों एवं बैंकिंग जैसी सेवाओं में निवेश इत्यादि।
- उद्योगों और सेवाओं में नए रोजगार उत्पन्न हुए हैं, साथ ही इन उद्योगों को कच्चे माल इत्यादि की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कंपनियाँ समृद्ध हुईं।
- वैश्वीकरण नई और उन्नत तकनीक को लाता है, जिसके द्वारा स्थानीय कंपनियों को भी लाभ मिलता है।

**9.** **सरकार विदेशी निवेश को कैसे आकर्षित करती है? व्याख्या कीजिए।** **(CBSE 2019)**

**उत्तर** सरकार विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठा रही है

- सरकार द्वारा विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना की जा रही है।
- इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्वस्तरीय सुविधाएँ; जैसे–बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भंडारण, मनोरंजन एवं शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने वाली कंपनियों को प्रारंभिक पाँच वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ता।
- विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार ने श्रम-कानून में लचीलापन लाने की अनुमति दी है।

**10.** **न्यायसंगत वैश्वीकरण के महत्त्वपूर्ण मापदंडों को बताइए।**

**उत्तर** न्यायसंगत वैश्वीकरण के महत्त्वपूर्ण मापदंडों में शामिल हैं

- सभी के लिए समान अवसर
- वैश्वीकरण के लाभों में सबकी हिस्सेदारी
- सरकार व इसकी नीतियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका, जिसमें
  - धनी और प्रभावशाली लोगों को ही नहीं, बल्कि देश के सभी लोगों के हितों का संरक्षण शामिल हो।
  - श्रमिक कानूनों का उचित कार्यान्वयन हो और श्रमिकों के अधिकारों की बात शामिल हो।

**11.** **''वैश्वीकरण का प्रभाव एकसमान नहीं है।'' इस कथन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।** **(NCERT, CBSE 2020)**

**उत्तर** वैश्वीकरण और उत्पादकों (स्थानीय एवं विदेशी) दोनों के बीच वृहत्तर प्रतिस्पर्द्धा से भारत में व्यापार के ढंग और लोगों के दैनिक जीवन में बहुत बदलाव हुआ है, लेकिन अभी भी जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग इस लाभ से वंचित है। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा के कारण कई छोटे व्यवसायियों के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हुआ है। कड़ी प्रतिस्पर्द्धा के कारण कई लोगों को उनकी नौकरियों से हटाया गया, लेकिन ग्राहकों के पास अब बेहतर विकल्प है, इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का प्रभाव एकसमान नहीं है।

**12.** **वैश्वीकरण को और अधिक निष्पक्ष बनाने के लिए भारत सरकार किस प्रकार मुख्य भूमिका निभा सकती है?** **(CBSE 2019)**

**उत्तर** वैश्वीकरण को निष्पक्ष बनाने के लिए भारत सरकार निम्नलिखित कार्य कर सकती है

- सरकार न केवल अमीर एवं शक्तिशाली बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के हितों को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्माण करे।
- छोटे उत्पादकों का समर्थन करे ताकि वे बड़े निर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर सकें।
- यह सुनिश्चित करके कि मजदूरों को उनके अधिकार मिल सकें तथा सभी कंपनियों द्वारा इसका पालन हो।
- व्यापार एवं निवेश बाधाओं का उपयोग करके तथा विश्व व्यापार संगठन से निष्पक्ष नियमों के लिए बातचीत करके।

## • दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**1.** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादों का विभिन्न तरीकों से किस प्रकार विस्तार करती हैं? उदाहरण देकर समझाइए। **(CBSE 2019)**

अथवा बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न देशों की उत्पादन प्रक्रिया को एक-दूसरे से जोड़ती हैं।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

***उत्तर*** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वे कंपनियाँ हैं, जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती हैं। ये कंपनियाँ उन देशों में अपने कारखाने स्थापित करती हैं, जहाँ उन्हें सस्ता श्रम एवं अन्य साधन उपलब्ध होते हैं तथा सरकारी नीतियाँ भी उनके अनुकूल हों। दूसरे देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कई तरीकों से उत्पादन या उत्पाद पर नियंत्रण स्थापित करती हैं, जो निम्न हैं

- कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसी स्थानीय कंपनी से साझीदारी करती हैं ताकि उनका कार्य आरंभ हो सके। स्थानीय कंपनी को स्थानीय बाजार में व्यवसाय के माहौल के बारे में बेहतर ढंग से पता होने से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इससे मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त स्थानीय कंपनी का व्यावसायिक ढाँचा पहले से ही सुदृढ़ होता है।
- जब व्यापार एक निश्चित अनुपात में बढ़ जाता है, तो बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ साझीदारी को तोड़कर एक स्वतंत्र कंपनी की तरह कार्य करने लगती हैं तथा इससे अपने व्यापार के विस्तार के साथ ही बेहतर नियंत्रण स्थापित करती हैं।
- कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आरंभ से स्वतंत्र रूप से अपना काम आरंभ करती हैं। एक तरफ जहाँ कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय बाजार के लिए उत्पादन करती हैं, वहीं कुछ कंपनियाँ निर्यात के लिए उत्पादन करती हैं।
- अधिकांशतः बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों को खरीदकर उत्पादन का प्रसार करती हैं; जैसे–एक अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी 'कारगिल फूड्स' ने एक अत्यंत छोटी भारतीय कंपनी परख फूड्स को खरीदकर अपने व्यवसाय का विस्तार किया।

**2.** वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

***उत्तर*** वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले निम्न कारक हैं

(i) **प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति** विगत 50 वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में अत्यधिक उन्नति हुई है। इससे लंबी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्र आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया गया है।

(ii) **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी** सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है। दूरसंचार सुविधा (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स) और उपग्रह संचार का उपयोग विश्व में एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है।

इसका एक उदाहरण लंदन में पाठकों के लिए प्रकाशित एक समाचार-पत्र है, जिसे दिल्ली में डिजाइन और मुद्रित किया गया है। पत्रिका का पाठ लंदन से इंटरनेट द्वारा दिल्ली के कार्यालय तक भेजा जाता है। दिल्ली कार्यालय में डिजाइनर दूरसंचार सुविधाओं का उपयोग करके लंदन कार्यालय से पत्रिका के डिजाइन के विषय में निर्देश प्राप्त करते हैं, फिर छपाई के बाद पत्रिकाओं को लंदन भेजा जाता है।

(iii) **बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ** वैश्वीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। व्यापार के क्षेत्र में अन्य देशों से एक-दूसरे का संबंध वैश्वीकरण का परिचायक है।

**3.** व्यापार अवरोधक का आशय स्पष्ट करते हुए नई आर्थिक नीति, 1991 का वर्णन कीजिए।

***उत्तर*** **व्यापार अवरोधक** सरकार द्वारा माल या सेवाओं के अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान पर प्रतिबंध लगाना व्यापार अवरोधक कहलाता है। आयात पर कर (आयात शुल्क) व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है। इससे अवरोधक इसलिए कहा गया है, क्योंकि यह कुछ प्रतिबंध लगाता है। सरकार व्यापार अवरोधक का प्रयोग विदेशी व्यापार में वृद्धि या कटौती करने तथा देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी आयात की जाएँ, यह निर्णय करने के लिए कर सकती है।

**नई आर्थिक नीति, 1991** वर्ष 1991 के आस-पास यह अनुभव किया गया कि भारतीय उत्पादकों को विश्व के निर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्द्धा करनी चाहिए, जिससे वे अपने प्रदर्शन और वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकें। यही कारण है कि वर्ष 1991 में भारत सरकार ने अपनी विदेशी व्यापार नीति में कुछ बड़े परिवर्तन किए। एक ऐसा परिवर्तन उदारीकरण था। यह निर्णय विश्व व्यापार संगठन जैसे शक्तिशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्थित था।

**4.** उदारीकरण क्या है? भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के लिए सरकार ने कौन–कौन से कदम उठाए? **(CBSE 2012)**

अथवा उदारीकरण किसे कहते हैं? भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के किन्हीं चार प्रभावों का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2017)**

***उत्तर*** सरकार द्वारा अवरोधकों अथवा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण के नाम से जानी जाती है। भारत में यह वर्ष 1991 में भारत सरकार द्वारा आयात पर प्रतिबंध को कम करने के निर्णय को संदर्भित करता है। व्यापार के उदारीकरण से व्यवसायियों को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की अनुमति मिली है कि वे क्या आयात या निर्यात करना चाहते हैं। वर्तमान में सरकार पहले की तुलना में कम प्रतिबंध लगाए है जिसे अधिक उदार माना जाता है। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए

(i) उदारीकरण नीति के अंतर्गत उद्योगों को बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन करने तथा विस्तार करने की छूट दी गई।

(ii) तीन उद्योगों के अतिरिक्त सभी उद्योगों को सभी प्रकार के औद्योगिक लाइसेंस से मुक्त कर दिया गया।

(iii) अब उत्पादक विदेशों से कच्चा माल तथा मशीनरी का आयात करने के लिए स्वतंत्र हो गए।

(iv) अब भारतीय उद्योगों में विदेशी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग होने लगा।

**5.** विश्व व्यापार संगठन पर एक टिप्पणी लिखिए। **(CBSE 2012)**

*अथवा* विश्व व्यापार संगठन किस प्रकार सभी देशों में मुक्त व्यापार की सुविधा देता है? उदाहरणों सहित विश्लेषण कीजिए। **(CBSE 2020)**

***उत्तर*** विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो देशों के बीच व्यापार के वैश्विक नियमों का पालन करता है। इसका मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार आसानी से, अनुमानित रूप से और जितना संभव हो उतना स्वतंत्र रूप से हो। इसने भारत के विदेशी व्यापार और निवेश के उदारीकरण का समर्थन किया है। विकसित देशों की पहल पर विश्व व्यापार संगठन शुरू हुआ था।

इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण करना है और यह सुनिश्चित करना है कि इसके सदस्य नियमों का पालन करते हैं। वर्तमान में विश्व व्यापार संगठन के 164 सदस्य हैं। हालाँकि विश्व व्यापार संगठन द्वारा सभी के लिए स्वतंत्र व्यापार की अनुमति दी जाती है, लेकिन यह पाया जाता है कि विकसित देशों ने कुछ व्यापार अवरोधकों को अनुचित ढंग से बनाए हुए रखा है और विकासशील देशों की बाधाओं को दूर करने के लिए मजबूर किया गया है।

इसका एक उदाहरण कृषि उत्पादों में व्यापार है। संयुक्त राज्य अमेरिका में कृषिविदों को उनकी सरकार द्वारा अत्यधिक सब्सिडी दी जाती है, जिससे वे विकासशील देशों के लिए कम कीमतों पर गेहूँ और कपास जैसे उत्पादों का निर्यात कर सकें।

**6.** वैश्वीकरण के परिणामों की व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

**उत्तर** वैश्वीकरण के परिणाम निम्नलिखित हैं

(i) **रोजगार के बेहतर अवसर** आज भारत बी.पी.ओ. सेक्टर में एक अग्रणी देश है। बी.पी.ओ. से कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सहयोग मिलता है। उदाहरणस्वरूप, अमेरिका में बैठा कोई ग्राहक जब अपनी समस्या के समाधान के लिए फोन कॉल करता है, तो शायद वह गुड़गाँव में बैठे किसी व्यक्ति से बात करता है। आर्थिक क्रियाओं के बढ़ने के कारण भारत में कई नए आर्थिक केंद्रों का विकास हुआ है; जैसे–गुड़गाँव, चंडीगढ़, बंगलुरु, हैदराबाद और मेरठ।

(ii) **जीवन-शैली में बदलाव** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप लोगों के रहन-सहन, बोलचाल के तरीकों में बदलाव को सहजता से देखा जा सकता है। विशेषकर शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में यह परिवर्तन देखा जा सकता है।

(iii) **विकास के असमान लाभ** वैश्वीकरण ने अधिकतर शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को लाभ पहुँचाया है। इनके समक्ष अब पहले से अधिक विकल्प हैं और वे अब अनेक उत्पादों की उत्कृष्ट गुणवत्ता और कम कीमत से लाभान्वित हो रहे हैं। परिणामतः ये लोग पहले की तुलना में आज अपेक्षाकृत उच्चतर जीवन स्तर का आनंद ले रहे हैं।

वहीं उत्पादकों और श्रमिकों पर वैश्वीकरण का एकसमान प्रभाव नहीं पड़ा है। छोटे उत्पादक या तो बड़ी कंपनियों से प्रतिस्पर्द्धा करते या नष्ट होते जा रहे हैं, वहीं वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्द्धा के दबाव ने श्रमिकों के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

(iv) **विकसित देशों द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग** विकसित देश आज भी अपने किसानों को भारी अनुदान देते हैं और ट्रेड बैरियर लगाते हैं। बदले में विकासशील देशों को विश्व व्यापार संगठन से बहुत कुछ सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं।

## ● केस स्टडी आधारित प्रश्न

**1.** निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उत्पादन मुख्यत: देशों की सीमाओं के अंदर ही सीमित था। इन देशों की सीमाओं को लाँघने वाली वस्तुओं में केवल कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और तैयार उत्पाद ही थे। भारत जैसे उपनिवेशों से कच्चा माल एवं खाद्य पदार्थ निर्यात होते थे और तैयार वस्तुओं का आयात होता था। व्यापार ही दूरस्थ देशों को आपस में जोड़ने का मुख्य जरिया था।

यह बड़ी कंपनियाँ, जिन्हें बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कहते हैं, के परिदृश्य पर उभरने से पहले का युग था। एक बहुराष्ट्रीय कंपनी वह है, जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण अथवा स्वामित्व रखती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उन प्रदेशों में कार्यालय तथा उत्पादन के लिए कारखाने स्थापित करती हैं, जहाँ उन्हें सस्ता श्रम एवं अन्य संसाधन मिल सकते हैं। उत्पादन लागत में कमी करने तथा अधिक लाभ कमाने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ ऐसा करती हैं।

विगत दो तीन दशकों से अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विश्व में उन स्थानों की तलाश कर रही हैं, जो उनके उत्पादन के लिए सस्ते हों इन देशों में बहुराष्ट्रीय कंपिनयों के निवेश में वृद्धि हो रही है, साथ ही विभिन्न देशों के बीच विदेश व्यापार में भी तीव्र वृद्धि हो रही हैं

विदेश व्यापार का एक बड़ा भाग बहुराष्टीय कंपिनयों द्वारा नियंत्रित है। जैसे, भारत में फोर्ड मोटर्स का कार संयंत्र, केवल भरत के लिए ही कारों का निर्माण नहीं करता है, बल्कि वह अन्य विकासशील देशों को कारें और विश्व भर में अपने कारखानों के लिए कार-पुर्जों का भी निर्यात करता है।

(i) औद्योगीकरण के प्रारंभ में वस्तु उत्पादन की स्थिति क्या थी?

**उत्तर** औद्योगीकरण के प्रारंभ में देश की सीमाओं के भीतर ही वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था, परंतु उत्पादन में आवश्यक कच्चे माल का आयात किया जाता था। प्रारंभ में भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण की प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करने के लिए कच्चे माल का निर्यात करता था।

(ii) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ व्यापार को किस प्रकार संचालित करती हैं?

**उत्तर** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादन की प्रक्रिया को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करती हैं, जिससे वस्तु की आपूर्ति निरंतर बनी रहे। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादन तथा सेवाओं को विश्व में प्रत्येक देश में पहुँचाती हैं, जिससे बहुराष्ट्रीय कंपनियों की व्यापकता में बढ़ोतरी होती है तथा वह अधिक लाभ कमाती हैं।

(iii) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत क्यों लाभदायक है?

**उत्तर** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ के लिए भारत इसलिए लाभदायक है, क्योंकि भारत में अत्यंत कुशल इंजीनियर उपलब्ध हैं, जो उत्पादन के तकनीकी पक्षों को समझ सकते हैं। यहाँ अंग्रेजी बोलने वाले शिक्षित युवक भी हैं, जो ग्राहक देखभाल सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं।

**2.** निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

वास्तव में, कई शीर्षस्थ बहुराष्ट्रीय कंपनियों की संपत्ति विकासशील देशों की सरकारों के संपूर्ण बजट से भी अधिक है। ऐसी अपार संपत्ति वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शक्ति और प्रभाव पर विचार करें। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एक अन्य तरीके से उत्पादन नियंत्रित करती हैं। विकसित देशों की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर देती हैं।

वस्त्र, जूते-चप्पल एवं खेल के सामान ऐसे उद्योग हैं, जहाँ विश्वभर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को इन उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। फिर इन्हें अपने ब्रांड नाम से ग्राहकों को बेचती हैं। इन बड़ी कंपनियों में दूरस्थ उत्पादकों के मूल्य, गुणवत्ता, आपूर्ति और श्रम-शर्तों का

निर्धारण करने की प्रचंड क्षमता होती है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कई तरह से अपने उत्पादन कार्य का प्रसार कर रही हैं और विश्व के कई देशों की स्थानीय कंपनियों के साथ पारस्परिक संबंध स्थापित कर रही हैं। स्थानीय कंपनियों के साथ साझेदारी द्वारा, आपूर्ति के लिए स्थानीय कंपनियों का इस्तेमाल करके और स्थानीय कंपनियों से निकट प्रतिस्पर्द्धा करके अथवा उन्हें खरीद कर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूरस्थ स्थानों के उत्पादन पर अपना प्रभाव जमा रही हैं। परिणामत: दूर-दूर स्थानों पर फैला उत्पादन परस्पर संबंधित हो रहा है।

(i) बहुराष्ट्रीय कंपनी किस प्रकार से स्थानीय कंपनियों को लाभ पहुँचाती हैं?

***उत्तर*** बहुराष्ट्रीय कंपनी सर्वप्रथम स्थानीय कंपनियों को अतिरिक्त निवेश प्रदान करती हैं, जिससे स्थानीय कंपनियाँ तीव्र गति से वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करती हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने साथ नई प्रौद्योगिकी को भी लाती हैं, जिससे उत्कृष्ट वस्तुओं का निर्माण होता है।

(ii) बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा वस्तु उत्पादन को किस प्रकार नियंत्रित किया जाता है?

***उत्तर*** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादों की आपूर्ति के लिए विभिन्न देशों को ऑर्डर देती हैं। ये देश बहुत कम कीमत पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को ऑर्डर की आपूर्ति कर देते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन उत्पादों को अपने ब्रांड के नाम से ग्राहकों को बेचती हैं। इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनी वस्तु उत्पादन को नियंत्रित करती हैं।

(iii) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों पर किस प्रकार अपना प्रभुत्व स्थापित करती हैं?

***उत्तर*** बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आपूर्ति के लिए स्थानीय कंपनियों का इस्तेमाल और स्थानीय कंपनियों से निकट प्रतिस्पर्द्धा एवं साझीदारी करके अथवा उन्हें खरीदकर अपना प्रभुत्व स्थापित करती हैं।

**3. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

**स्रोत 'अ' व्यापार अवरोध का प्रयोग**

आयात पर कर, व्यापार अवरोधक का एक उदाहरण है। इसे अवरोधक इसलिए कहा गया है, क्योंकि यह कुछ प्रतिबंध लगाता है। सरकारें व्यापार अवरोधक का प्रयोग विदेश व्यापार में वृद्धि या कटौती (नियमित करने) करने और देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में आयातित होनी चाहिए, यह निर्णय करने के लिए कर सकती हैं।

(i) व्यापार अवरोधक किस प्रकार से सरकार के लिए सहायक होता है? परिभाषित कीजिए।

***उत्तर*** सरकार व्यापार अवरोधक का प्रयोग व्यापार में वृद्धि या कटौती के लिए कर सकती है, जिससे देश के उद्योगों को नई ऊर्जा प्राप्त होती है। इसका प्रयोग कर सरकार देश में किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में आयातित करने का भी निर्णय ले सकती है।

**स्रोत 'ब' स्वतंत्रता पश्चात् भारत में विदेशी निवेश पर प्रतिबंध**

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा रखा था। देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षण प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य माना गया। 1950 और 1960 के दशकों में उद्योगों का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्द्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती। इसलिए, भारत ने केवल अनिवार्य चीजों; जैसे—मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी। ध्यान दीजिए कि सभी विकसित देशों ने विकास के प्रारंभिक चरणों में घरेलू उत्पादकों की विभिन्न तरीकों से संरक्षण दिया है।

(ii) स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने किस तरह की व्यापार नीति को अपनाया?

***उत्तर*** स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने अधिकतर वस्तुओं पर अवरोध लगा दिया। उस समय केवल मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की अनुमति थी। इस समय भारत के व्यापार अवरोध का प्रमुख कारण स्थानीय उद्योगों को प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षित रखना था।

**स्रोत 'स' भारतीय व्यापार का उदारीकरण**

भारत में करीब वर्ष 1991 के प्रारंभ से नीतियों में कुछ दूरगामी परिवर्तन किए गए। सरकार ने यह निश्चय किया कि भारतीय उत्पादकों के लिए विश्व के उत्पादकों से प्रतिस्पर्द्धा करने का समय आ गया है। यह महसूस किया गया कि प्रतिस्पर्द्धा से देश में उत्पादकों के प्रदर्शन में सुधार होगा, क्योंकि उन्हें अपनी गुणवत्ता में सुधार करना होगा। इस निर्णय का प्रभावशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने समर्थन किया।

(iii) भारत ने अपने व्यापार में किस प्रकार का परिवर्तन किया?

***उत्तर*** वर्ष 1991 के पश्चात् भारत सरकार ने उदारीकरण की नीति अपनाई। इस नीति के अंतर्गत व्यापारिक अवरोधों में छूट प्रदान की गई। इस छूट का प्रमुख कारण अपनी वस्तुओं तथा सेवाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाना था।

# चैप्टर टेस्ट

## • वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**1.** विश्व व्यापार संगठन की स्थापना किन उद्देश्यों को पूरा करने हेतु की गई थी?
(a) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करने हेतु
(b) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाने के लिए
(c) 'a' और 'b' दोनों
(d) विकसित देशों के हितों की रक्षा करने हेतु

**2.** निम्न में से कौन-सा निवेश का उदाहरण है?
(a) कंपनी (b) व्यापार (c) जमीन (d) फूड्स

**3.** उदारवादी नीतियों के अंतर्गत किसको हटा दिया गया है?
(a) प्रतिबंध (b) लाइसेंस (c) व्यापार (d) कोटा

**4.** परिवहन में सुधार से किसके प्रोत्साहन में मदद मिली है?
(a) वैश्वीकरण (b) उदारीकरण (c) निजीकरण (d) वाणिज्यीकरण

**5.** दिए गए कथनों का अध्ययन कर सही विकल्प का चयन करें
1. सरकार द्वारा व्यापार से अवरोध हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण कहलाती है।
2. वर्तमान में अधिकतर देशों की सरकार द्वारा उदारीकरण अपनाया गया है।
3. विश्व व्यापार संगठन उदारीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है।

**कूट**
(a) 1 और 2 (b) 1 और 3 (c) 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

## • वर्णनात्मक प्रश्न

### लघु उत्तरीय प्रश्न

**6.** वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के योगदान को बताइए।

**7.** व्यापार अवरोधक और उदारीकरण को भारत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

**8.** विश्व व्यापार संगठन की उपयोगिता व सीमाओं को बताइए।

**9.** अंतर्देशीय उत्पादन क्या है?

**10.** बहुराष्ट्रीय कंपनियों को एक उत्पादन इकाई के रूप में स्थापित करने के पीछे के कारकों का वर्णन कीजिए।

**11.** वैश्वीकरण के प्रारंभ होने से पहले की स्थितियों का भारत के संदर्भ में परिचय दीजिए।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

**12.** बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश के उद्देश्य व लक्ष्यों को विस्तारपूर्वक बताइए।

**13.** "दूर-दूर तक विस्तृत उत्पादक इकाइयाँ परस्पर संबंधित हो रही हैं।" स्पष्ट कीजिए।

**14.** "विदेश व्यापार विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने का मुख्य माध्यम रहा है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

**उत्तर** **1.** (c) **2.** (a) **3.** (a) **4.** (a) **5.** (d)